जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

चूरू

Rashtradoot

फोनः- 256906, 256907, फैक्सः- 01562-256908 वर्षः 16 संख्याः 05 प्रभात चूरू, शुक्रवार 3 मई, 2024 पो. रजि. न. चूरू/084/2019-21 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

बांग्लादेश में गत कुछ समय से टाइगर के अंगों से बनी वस्तुओं व दवाओं का उपभोग बढ़ गया है। इससे यहाँ के संकटग्रस्त बंगाल टाइगर के लिए खतरा और बढ़ गया है। आमतौर पर तो विदेशी मांग पूरी करने के लिए इनका शिकार किया जाता था पर अब स्थानीय स्तर पर भी बंगाल टाइगर के अंगों से बने उत्पादों की मांग बढ़ रही है। अध्ययन के प्रमुख लेखक, चीन में यूनान के शीशाँगबाना ट्रॉपिकल बॉटैनिकल गार्डन के नासिर उद्दीन ने कहा कि, एतिहासिक रुप से बांग्लादेश जीवित टाइगर और टाइगर के अंगों का प्रमुख सप्लायर रहा है, पर हाल ही में हमने देखा कि घरेलू स्तर पर इन उत्पादों की खपत बढ़ी है, खासकर सम्पन्न वर्ग में। इस मांग की पूर्ति के लिए भारत और म्यानमार में टाइगर के अवैध शिकार में तेजी आई है। शोध में पता चला है कि, बांग्लादेश 15 देशों तथा उन स्थानों पर, जहाँ बड़ी संख्या में बंगलादेशी रहते हैं, टाइगर के अंगों की आपूर्ति करता है। इनमें भारत, चीन, मलेशिया टॉप पर हैं तथा यू.के., जर्मनी, ऑस्ट्रेलिया एवं जापान जैसे देश भी इसमें शामिल हैं। शोध के अनुसार, टाइगर की खाल, हड्डियां, दांत और सुखाए हुए मांस की मांग बहुत ज्यादा है। टाइगर के शावकों की तस्करी के प्रमाण भी मिले हैं। मोहम्मद सनाउल्लाह पटवारी, जो कि बांग्लादेश वाइल्डलाइफ क्राइम कंट्रोल यूनियन के प्रमुख हैं, ने कहा कि, वन्यजीवों की तस्करी भारी चुनौती है। बांग्लादेश के विभिन्न समुदायों में टाइगर के अंगों को लेकर जो सांस्कृतिक मान्यताएं हैं, उनकी वजह से यह अवैध व्यापार ज्यादा बढ़ा है और अब यह देश टाइगर और उसके अंगों की तस्करी का केन्द्र बन गया है। वर्ष 2022 में आई रिपोर्ट के अनुसार जनवरी 2000 से जून 2022 के बीच टाइगर व उसके अंगों की बरामदगी के 36 मामले सामने आए, जिसमें 50 टाइगर बरामद किए गए। लेकिन, इस अवधि में मात्र 6 लोगों को ही जेल हुई और चार पर जुर्माना हुआ।

''दरबार पॉलिटिक्स'' के कारण अभी तक अटका हुआ है कांग्रेस का अमेठी व रायबरेली का निर्णय

प्रियंका गाँधी, रायबरेली से चुनाव लड़ने के लिये काफी आतुर दिखती हैं

- पर, राहुल उनको यह चुनाव नहीं लड़ाना चाहते।
- राहुल के सलाहकारों ने राहुल को पूरी तरह समझा रखा है कि, अगर प्रियंका रायबरेली से चुनाव जीत कर संसद में पहुंच जाती हैं तो वे एक बड़े ''पावर सेन्टर'' के रूप में उभरकर, राहुल के लिये, उनके नेतृत्व के लिए भारी चुनौती बन सकती हैं।
- अतः राहुल गाँधी, प्रियंका को रायबरेली से चुनाव लड़ाने के काफी खिलाफ हैं।
- हाल ही में कांग्रेसाध्यक्ष खड़गे राहुल गाँधी से शिमोगा एयरपोर्ट पर मिले तथा पूरा प्रयास किया, राहुल को अमेठी से चुनाव लड़ने के लिए मनाने का। इसके बाद के.सी. वेणुगोपाल ने भी राहुल को अमेठी से चुनाव लड़ने के लिये मनाने की कोशिश की, सोनिया गाँधी भी यह तर्क सही मानती हैं कि, राहुल अगर अमेठी से चुनाव नहीं लड़ेंगे तो इण्डिया गठबंधन को नुकसान होगा।
- पर, राहुल गाँधी इन सभी तर्कों से सहमत नहीं है, अतः अमेठी का टिकट कांग्रेस के गले की घंटी हो गया है तथा इस मुद्दे का कोई समाधान किसी की भी समझ में नहीं आ रहा है।

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 2 मई। अमेठी और रायबरेली लोकसभा सीटों पर कांग्रेस से कौन चुनाव लड़ेगा, इसे लेकर बहुत ज्यादा भ्रामक स्थिति बनी हुई है।

कल नामांकन पत्र दाखिल करने का अंतिम दिन है और गाँधी परिवार के अलावा इस विषय में किसी के पास कोई जानकारी नहीं है और यह परिवार इस बात को लेकर बिल्कुल चुप्पी साधे हुए है कि, क्या राहुल और प्रियंका क्रमशः अमेठी और रायबरेली से चुनाव लड़ेंगे।

जयराम रमेश जब यह कहते हैं कि, प्रत्याशियों की लिस्ट आ रही है, तब उनके चेहरे पर बेचैनी स्पष्ट नज़र आती है क्योंकि पिछले कुछ दिनों से यही कुछ चलता रहा है।

उधर, भाजपा ने उत्तर प्रदेश सरकार में राज्य मंत्री दिनेश को रायबरेली से अपना उम्मीदवार बनाने की घोषणा की है। दिनेश पिछली बार रायबरेली में सोनिया गाँधी से चुनाव हार गए थे और अमेठी में स्मृति ईरानी, राहुल गांधी के चुनाव मैदान में उतरने की प्रतीक्षा कर रही है।

राहुल गांधी पिछली बार अमेठी में स्मृति ईरानी से सामने चुनाव हार गए थे। स्मृति ने उसके बाद अमेठी में एक घर खरीदा और वहीं बस गईं।

अमेठी और रायबरेली के कांग्रेसी राहुल और प्रियंका, दोनों से यह पुरजोर अनुरोध कर रहे हैं कि वे अपने परिवार की सीटें बचाएं।

सोनिया गाँधी, मल्लिकार्जुन खड़गे और इण्डिया गठबंधन की सहयोगी पार्टियों द्वारा भी यही तर्क दिया जा रहा है कि, चुनाव नहीं लड़ने का निर्णय उत्तर भारत में कांग्रेस और विपक्ष के इंडिया गठबंधन को क्षति पहुंचाएगा क्योंकि कांग्रेस ने भाजपा के खिलाफ जो गति पकड़ी है वह इससे समाप्त हो जाएगी।

ज्ञात हुआ है कि अमेठी और रायबरेली की सीटों को लेकर राहुल और मल्लिकार्जुन खड़गे ने शिमोगा एयरपोर्ट पर चर्चा हुई थी, लेकिन सूत्र बताते हैं कि राहुल असहमत से नज़र

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

चूरू में भाजपा प्रत्याशी कांग्रेस के राहुल कस्वां से नहीं बल्कि अपनी पार्टी के वसुंधरा गुट से हारेगा?

राहुल कस्वां को हमेशा से वसुंधरा गुट का माना जाता है, पर इस बार राहुल कस्वां का टिकट काट दिया गया

- टिकट कटने के बाद राहुल कस्वां रातोंरात कांग्रेस के प्रत्याशी बन गए, इससे कांग्रेस में भारी असंतोष फैला और टिकट के दावेदार माने जाने वाले सभी नेता घर बैठ गए। कांग्रेस कार्यकर्ताओं की उदासीनता को आमजन ने भी समझ लिया था, कस्वां पिछड़ से रहे थे।
- राहुल कस्वां को हो रहे इस नुकसान की भरपाई वसुंधरा गुट ने कर दी। इस गुट ने भाजपा में रह कर ही भाजपा के देवेन्द्र झांझड़ियां की भारी खिलाफत की। समझा जाता है कि, इन्हीं लोगों ने राजेन्द्र राठौड़ को तारानगर चुनाव हरवाया था।
- पूरे चुनाव में जाट राहुल कस्वां के पक्ष में तो राजपूत झांझड़िया के पक्ष में लामबंद नज़र आए और अन्य जातियों, जैसे ब्राह्मण, वैश्य, सैनी, प्रजापत, आदि की बात करे तो इनके वोट बंट गए, लेकिन एस.सी., एस.टी. के वोट भारी तादाद में कांग्रेस को मिले।

चूरू, 2 मई (कासं.)। चूरू लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र में भाजपा के पक्ष में चली हवा मतदान से पहले ही बदल गई। ये बदली हुई हवा भाजपा उम्मीदवार देवेन्द्र झांझड़िया, पूर्व नेता प्रतिपक्ष राजेन्द्र राठौड़ के साथ-साथ मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के लिए भी हानिकारक साबित होगी। क्योंकि भजनलाल शर्मा अपनी चुनावी सभाओं में बार-बार यह दावा कर चुके हैं कि राजस्थान में भाजपा सभी 25 सीटों पर जीत हासिल करेगी, वो भी 5 लाख मतों से पर चूरु इसमें अड़चन बनता लग रहा है। सूत्रों का कहना है कि सभी 25 सीटें जीतने का दावा वसुंधरा गुट की वजह से नामूमकिन प्रतीत हो रहा है।

चूरु में भाजपा ने दो बार सांसद रहे राहुल कस्वां का टिकट काटकर पैरालम्पिक खेलों में स्वर्ण पदक विजेता देवेंद्र झांझड़िया को मैदान में उतारा। समझा जाता है कि यह कदम क्षेत्र के दिग्गज नेता राजेन्द्र राठौड़ के इशारे पर उठाया गया था। हालांकि कांग्रेस आलाकमान ने भाजपा के बागी सांसद राहुल कस्वां को रातों-रात मैदान में उतार दिया पर कहीं ना कहीं अपनी पार्टी के समर्पित कार्यकर्ताओं का विश्वास खो दिया था। उन कार्यकर्ताओं ने चुनाव प्रचार के दौरान पार्टी उम्मीदवार कस्वां से दूरी बना ली थी। कांग्रेस कार्यकर्ता या तो कस्वां की किसी सभा में गए ही नहीं और गए तो बेमन से गए। जनता ने उनके भावों को समझ लिया। एक बार तो लगा कि ये कांग्रेसी नेता राहुल कस्वां की जमानत ही जब्त करवा देंगे।

इन नेताओं में सरदारशहर विधायक अनिल शर्मा, राजगढ़ की पूर्व विधायक कृष्णा पूनिया और चूरू लोकसभा सीट व विधानसभा सीट से कांग्रेस के उम्मीदवार रहे रफीक मंडेलिया का नाम खुलेआम लिया जा रहा है। इतना ही नहीं तारानगर विधायक नरेंद्र बुढ़ानिया ने भी अपनी पार्टी के उम्मीदवार राहुल कस्वां के पक्ष में मन से प्रचार नहीं किया। कांग्रेस की टिकट के अन्य दावेदार तनवीर खान, रेहाना रियाज आदि एवं कई अन्य नेता तो अंडरग्राउंड ही हो गए। इसलिए कांग्रेस का वोट बैंक माने जाने वाले मुस्लिम वर्ग के 50 प्रतिशत मतदाताओं ने तो मतदान ही नहीं किया। इसका एक कारण यह भी रहा कि राहुल कस्वां ने भाजपा या नरेन्द्र मोदी के खिलाफ एक शब्द भी नहीं बोला सिर्फ राजेन्द्र राठौड़ पर ही निशाना साधा। मुस्लिम वर्ग के मतदाताओं को राहुल कस्वां थोपे हुए उम्मीदवार लगे और उन्होंने वोट नहीं करने का निर्णय ले लिया। इस कारण भी कांग्रेस को काफी नुकसान उठाना पड़ा।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

कॉमेडियन श्याम रंगीला मोदी के खिलाफ चुनाव मैदान में

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 2 मई। वाराणसी से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के खिलाफ चुनाव लड़ने के लिए कांग्रेस ने जहाँ उत्तर प्रदेश के पार्टी अध्यक्ष अजय राय को चुनाव मैदान में उतारा है, वहीं कॉमेडियन श्याम रंगीला भी राजस्थान स्थित अपने गृह नगर श्रीगंगानगर से

- गंगानगर के श्याम रंगीला ने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट में यह जानकारी दी। ज्ञातव्य है कि, मोदी की मिमिक्री करके ही श्याम रंगीला फेमस हुए थे।

रवाना हो गए हैं। वह भी लोकसभा चुनाव के तीसरे चरण में वाराणसी से चुनाव लड़ने के लिए अपना नामांकन दाखिल करेंगे।

रंगीला ने एक सोशल मीडिया पोस्ट में कहा कि, वे वाराणसी के वोटर्स को एक विकल्प उपलब्ध करवा रहे हैं।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'दबदबा थाः दबदबा रहेगा'

जन भावना के दबाव में भाजपा ने कुश्ती संघ के अध्यक्ष बृज भूषण शरण सिंह का टिकट काटा केसरगंज से

- पर साथ ही बृज भूषण सिंह के पुत्र करण भूषण सिंह को केसरगंज से टिकट दिया।
- गौंडा, बहराइच, बलरामपुर, सरस्वती जिलों के अलावा अयोध्या व बारांबकी में बृजभूषण सिंह का भारी प्रभाव है। जिसका पूरा प्रमाण बृज भूषण सिंह ने उस वक्त उस वक्त दिया था जब अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मैडल जीतने वाली महिला रैसलर्स ने यौन शोषण का आरोप लगाया तथा बृज भूषण सिंह को कुश्ती संघ के अध्यक्ष पद से हटाने की मांग की थी।
- बृज भूषण सिंह ने यौन शोषण के आरोपों के खिलाफ विशाल रैली आयोजित की अयोध्या के राम कथा पार्क में।
- बृज भूषण ने तीस आम सभाओं को संबोधित किया तथा कभी हैलीकॉप्टर से तो भी कार से अपने प्रभाव वाले क्षेत्र का सघन दौरा किया था। उस समय पूरा इलाका बृज भूषण सिंह के पोस्टरों से आच्छादित कर दिया गया था।

-श्रीनंद झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 2 मई। सार्वजनिक दबाव के चलते एक असाधारण घटनाक्रम में भाजपा नेतृत्व ने केसरगंज से वर्तमान सांसद बृजभूषण शरण सिंह को तो पार्टी का टिकट नहीं दिया है लेकिन, उनके बेटे करण भूषण सिंह को इस सीट से नामांकित किया है।

सांसद प्रज्वल रेवन्ना से संबंधित प्रचण्ड विवाद के बीच, स्वाभाविक ही है कि भाजपा बृजभूषण के मामले में कोई खतरा नहीं मोल लेना चाहती लेकिन, इसके साथ ही वह केसरगंज सीट पर बृजभूषण के परिवार के ही सदस्य को टिकट देने के लिए विवश है।

बृजभूषण का केसरगंज और आसपास के इलाकों में काफी दबदबा है, और उन्होंने समय-समय अपना दबदबा दिखाया भी है।

शीर्ष मैडल जीतने वाली, देश की महिला पहलवानों के बृजभूषण पर लगाए गए यौन उत्पीड़न के आरोपों के कारण उपजे आक्रोश और विरोध के बीच, बृजभूषण शरण सिंह ने पिछले वर्ष जून महीने में अयोध्या के रामकथा पार्क में एक ''जन चेतना महारैली'' का आयोजन किया था। घोषणा के कुछ घंटों के अंदर ही गौंडा, बहराइच, बलरामपुर और श्रावस्ती जिलों के मुख्य मार्ग और अयोध्या एवं बाराबंकी के समीपवर्ती जिले, बृज भूषण के पोस्टर्स से भर गये थे। अगले दस दिनों तक, सिंह ने इन जिलों के चप्पे-चप्पे का दौरा किया। इन दौरों में कई बार हैलीकॉप्टर का इस्तेमाल

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'गैर जमानती वॉरंट साधारण बात नहीं है'

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 2 मई। सुप्रीम कोर्ट ने अपने एक नवीनतम निर्णय में कहा है कि, गैर जमानती वारंट रुटीन तरीके से जारी नहीं किया जा सकता। यह तभी

- सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि, गैर जमानती वॉरंट जारी करना कोई नियमित प्रक्रिया नहीं है, यह तभी जारी किया जा सकता है, जब अपराध जघन्य हो और आरोपी द्वारा सबूतों से छेड़छाड़ करने की संभावना हो।

जारी किया जा सकता है, जब आरोपी पर किसी जघन्य अपराध का केस दर्ज हो तथा यह आशंका हो कि, वह कानून

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

क्या इस बार फिर हरीश मीणा मुकद्दर का सिकंदर होंगे?

क्या टोंक-सवाई माधोपुर में हरीश मीणा का मुकद्दर कांग्रेस का मुकद्दर भी बना देगा

- 2014 में दौसा से भाजपा सांसद के रूप में चुनाव जीते हरीश मीणा ने 2018 में भाजपा छोड़कर कांग्रेस का दामन थामा था और 2018 व 2023 में देवली-उनियारा से विधानसभा चुनाव लड़ा और जीता भी। अब वे टोंक से कांग्रेस के टिकट पर लोकसभा चुनाव लड़ रहे हैं।
- टोंक-सवाई माधोपुर गुर्जर और मीणा बहुल सीट है। मीणा मतदाता हरीश मीणा के पक्ष में पूरी तरह लामबंद दिखे, वहीं गुर्जर मतदाता दुविधा ग्रस्त और बंटा हुआ नज़र आया।
- गुर्जर मतदाताओं की दुविधा का कारण सचिन पायलट को बताया जा रहा है। आमतौर पर पायलट उन क्षेत्रों में प्रचार के लिए नहीं जाते जहां, भाजपा का गुर्जर प्रत्याशी मैदान में होता है। पर टोंक-सवाई माधोपुर सीट पर पायलट ने अपने करीबी हरीश मीणा के लिए जम कर प्रचार किया व सभाएं कीं।
- यही नहीं, भाजपा के गुर्जर नेता भी भाजपा प्रत्याशी सुखबीर सिंह जौनपुरिया के साथ पूरे मन से खड़े नज़र नहीं आए। संभावना है कि, 2014 और 2019 में टोंक-सवाई माधोपुर से चुनाव जीत चुके जौनपुरिया, जिनके खिलाफ एंटी इन्कम्बैंसी भी है, को इस बार कांटे की टक्कर मिल रही है।

-टोंक संवाददाता द्वारा-

टोंक, 2 मई। पूर्व डायरैक्ट जनरल ऑफ पुलिस (डी.जी.पी.) हरीश मीणा, राजनीति में बहुत ''लक्की'' रहे हैं। वे पार्टी बदल चुके हैं। पहले वे भाजपा के टिकट पर सांसद बने, फिर 2018 में कांग्रेस के विजयी उम्मीदवार के रूप में विधानसभा पहुंचे। वर्ष 2014 के लोकसभा चुनाव में हरीश मीणा ने अपने बड़े भाई और कांग्रेस प्रत्याशी नमोनारायण मीणा को चुनाव में हराया था, जो काफी पहले राजनीति में आ गये थे तथा अपने चुनाव क्षेत्र में काफी मिलनसार व लोकप्रिय रहे हैं तथा केन्द्रीय मंत्री भी रह चुके हैं। बाद में हरीश मीणा ने 2018 व 2023 में कांग्रेस के टिकट पर देवली उनियारा से विधानसभा चुनाव लड़ा, सभी चुनाव कठिन थे तथा कांटे की टक्कर रही थी, पर, हरीश हर चुनाव जीतते गये और उनके चुनाव क्षेत्र में यह आम धारणा बनी कि, हरीश का मुकद्दर बहुत मजबूत है और उनको साधारण तौर पर मीणा बहुल सीट पर हराना कठिन ही नहीं नामुमकिन है।

इस बार भी कुछ ऐसा ही होता लगता है, टोंक-सवाईमाधोपुर सीट पर, जहां लगातार दो बार सांसद रहे भाजपा के उम्मीदवार सुखबीर सिंह जौनपुरिया व कांग्रेस के हरीश मीणा के बीच टक्कर है और इस बार लोकसभा चुनाव का अजीबोगरीब पहलू यह है कि, नैशनल स्तर का चुनाव स्थानीय मुद्दों पर लड़ा जा रहा है। क्या इस तथ्य का सीधा अर्थ यह नहीं है कि, मोदी लहर का वेग इस बार वह नहीं है जो, गत दो बार 2014 एवं 2019 के लोकसभा चुनाव में देखा गया था तथा दोनों बार भाजपा 25-0 के स्कोर से जीती थी राजस्थान में। क्या इसमें भी हरीश मीणा का मुकद्दर काम आया?

साथ ही क्योंकि मीणा व गुर्जर मुख्य प्रतिद्वंदी हैं, यह भी अपेक्षित ही था कि, दोनों जातियां अपनी-अपनी जाति के उम्मीदवार के पक्ष में लामबंद होंगी, मीणा मतदाता तो जरूर जोर-शोर से हरीश मीणा को जिताने के लिए पूर्णतया अपनी जाति के साथ बंधे नज़र आये। पर गुर्जरों में कुछ दुविधा की स्थिति दिखी, मतदान के दिन। दुविधा का कारण थे, सचिन पायलट। आमतौर से सचिन, उस सीट पर अपने उम्मीदवार का प्रचार करने से बचते हैं, जहां प्रतिद्वंदी उम्मीदवार गुर्जर हो। मकसद शायद था कि, गुर्जर वोटों का विभाजन न हो। पर, टोंक-सवाईमाधोपुर में उनके करीबी उम्मीदवार हरीश मीणा के खिलाफ एक गुर्जर, प्रत्याशी, जौनपुरिया मैदान में था। पायलट ने पहली बार अपनी नीति को बदला और हरीश मीणा के पक्ष में जम कर प्रचार किया। आमसभाएं की। स्वाभाविक ही था गुर्जर वोट दुविधा की स्थिति में आ गया। साथ ही यह भी देखा गया कि, भाजपा के पुराने गुर्जर नेता जैसे विजय बैंसला, अलका गुर्जर, विक्रम सिंह गुर्जर, पूरे मन से जौनपुरिया के पक्ष में सक्रिय नहीं हुए। कुछ उदासीन दिखे। उनका शायद सोच था कि, अगर हरीश मीणा सांसद बन जाते हैं तो, उनकी विधायक की सीट खाली हो जायेगी और भाजपा के टोंक-सवाईमाधोपर क्षेत्र के गुर्जर नेता, विधायक का चुनाव लड़ सकेंगे और जीत गये तो मंत्री बनने की लाइन में खड़े

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'कांग्रेस तो पाकिस्तान की मुरीद है'

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 2 मई। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने चुनावी लहर को भाजपा के पक्ष में मोड़ने के एक दृढ़ प्रयास के

- प्रधानमंत्री मोदी ने गुजरात के आणंद की एक सभा में यह टिप्पणी की और पाकिस्तान के एक नेता फवाद हुसैन द्वारा सोशल मीडिया पर राहुल की प्रशंसा में वीडियो पोस्ट करने को मुद्दा बनाया।

तहत कांग्रेस को पाकिस्तान का ''शिष्य'' बताते हुए कहा कि, पड़ोसी देश कांग्रेस के ''शहज़ादे'' को भारत का अगला प्रधानमंत्री बनाने का उत्सुक है।

मोदी की यह टिप्पणी, आज इन

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)